शुभकामना संदेश

प्राकृतिक सौन्दर्य से आच्छादित समन्वयवादी संस्कृति से आप्लावित, आध्यात्मिक स्पंदन से झंकृत एवं कर्म–ज्ञान–भक्ति से अच्छादित अन्तः सलिला फल्गू के तट पर अवस्थित ज्ञान एवं मोक्ष की नगरी गया में पितृपक्ष मेला का दिनांक– 12.09.2019 से शुभारभं हो रहा है, जो दिनांक– 29.0.2019 तक चलेगा।

ईश्वर के सगुण–साकार के प्रतीकात्मक स्वरूप की ब्रहमाण्डीय सत्ता का पिण्ड में अहवान कर निर्गुण–निराकार स्वरूप में विलय का संकल्प ही पिण्डदान है। पितृपक्ष मेला के अवसर पर लाखों की संख्या में देश–विदेश से श्रद्धालु पधार कर अपने पितरों के लिए पिण्डदान कर मुक्ति की कामना करते है।

गया के कण–कण में ऐतिहासिकता, पौराणिकता एवं धार्मिकता है। ज्ञान तथा मुक्ति का मार्ग ''गया'' के रास्ते से गुजरता है। महनीय एवं प्रणम्य ''गया'' को विश्व के दो महान धर्मों की राजधानी कहा जा सकता है, जहाँ से करूणा, दया, मानवता, अहिंसा और विश्वकल्याण के मंत्र आज भी गुंजायमान है। गया जी के सन्दर्भ में कथित है कि –

''गयायां नहि तत् स्थानं यत्र तीर्थो न विधते।
सांनिध्यं सर्वतीर्थाना ंगया–तीर्थम् ततो वरम्''।।

अर्थात – गया जी में ऐसा कोई स्थान नहीं है, जो तीर्थ न हो। यहाँ सभी तीर्थो का सानिध्य है।

भारत के धार्मिक एवं सांस्कृतिक मानचित्र पर ''गया'' मुक्ति का मार्ग प्रशस्त करती है। विष्णुनगरी के पग–पग में गरिमा और ईश्वर का वास है। आज ''पितृपक्ष मेला'' राष्ट्रीय स्वरूप पा चुका है। बिहार सरकार के संकल्प संख्या पटना 716 दिनांक 02.09.2014 के द्वारा इसे राजकीय मेला का दर्जा प्राप्त है। यह एक ऐसा स्थल है जो सनातन धर्मावलंबियों एवं बौद्ध धर्मावलंबियों दोनों के लिए तीर्थस्थल है। सनातन धर्मावलंबियों के लिए विष्णुपद और बौद्ध धर्मावलंबियों के लिए बोधगया, इन दोनों स्थलों के कारण ही गया की विशिष्ट पहचान है। सनातन धर्मावलंबियों के लिए तो गया मोक्षधाम के रूप में विश्वविख्यात है। ऐसे तो यहां पूरे वर्ष यात्री आते हैं एवं अपने पूर्वजों की आत्मा की चिरशांति के लिए तर्पण, पिण्डदान करते हैं, परन्तु पितृपक्ष के अवसर पर विशेष रूप से इसका संपादन किया जाता है। पिण्डदान भारतीय संस्कृति का महान अवदान है। इसी कारण पितृपक्ष की अवधि में गया मे सम्पूर्ण भारत का दृश्य दिखाई देता है।

शास्त्रों के अनुसार गया धाम का कण–कण यथेष्ट पवित्र एवं मोक्षदायी माना गया है। फिर भी जिन विशिष्ट स्थानों पर वेंदियाँ हैं उनका महत्व सर्वोपरि है। पिण्डवेदियों के अलावे गयाजी के सरोवरों का भी विशेष महत्व है। अनेकानेक सरोवरों पर भी पितृ पूजा के अनुष्ठान किये जाते हैं। अतः कहा जा सकता है कि गयाधाम ऐतिहासिक, पौराणिक तथा सांस्कृतिक दृष्टिकोण से ऐसा नगर है कि आज के वैज्ञानिक युग में भी सर्वश्रेष्ठ माना गया है।

जिला प्रशासन इस वर्ष तीर्थयात्रियों को पहले से भी बेहतर सुविधा उपलब्ध कराने के लिए लगातार प्रयासरत है। इसके लिए जिला प्रशासन द्वारा 16 कार्य समिति यथा–आवासन समिति, साफ–सफाई समिति पेयजल एवं शौचालय समिति, विद्युत एवं प्रकाश समिति, स्वास्थ्य समिति, विधि व्यवस्था समिति, यातायात एवं परिवहन समिति एवं अन्य समितियों का गठन किया गया है, जिसके द्वारा तीर्थयात्रियों को आवासन, पेयजल, शौचालय, साफ–सफाई आदि समुचित सुविधा उपलब्ध कराने हेतु लगातार कार्य किया जा रहा है। साथ ही अधोहस्ताक्षरी के स्तर से भी समिति के कार्यों की नियमित समीक्षा की जा रही है। तीर्थयात्रियों की सुरक्षा के लिए जगह–जगह पुलिस शिविर एवं सी0सी0टी0वी0 कैमरे लगाये जा रहे हैं। विभिन्न स्वयंसेवी संगठनों, सामाजिक कार्यकर्ताओं एवं गया जिला वासियों द्वारा भी **अतिथि देवो भवः** की भावना से तीर्थयात्रियों की सुविधा हेतु किसी न किसी रूप में अपना–अपना योगदान दिया जाता है, जो गया जी की गौरवशाली परंपरा में चार चाँद लगाता है। इस संबंध में विस्तृत जानकारी के लिए www. pinddaangaya.in तथा हेल्पलाईन नं0–8448596580 से भी प्राप्त की जा सकती है। इस कड़ी में Pinddaan Gaya नाम से Android App भी अलग से उपलब्ध है जिसे Website अथवा Google Play Store से Download किया जा सकता है। इसके अतिरिक्त Pinddaan Gaya नामक एक iOS App भी उपलब्ध है, जिसे App Store से Download किया जा सकता है।

जिला प्रशासन का यह प्रयास होगा कि यात्रियों को इतनी अच्छी सुविधाएँ दी जाएँ , ताकि वे पितृधाम गया की अच्छी छवि अपने मानस–पटल पर संजोकर ही घर लौंटे।

ज्ञान और मोक्ष की नगरी में आप सभी श्रद्धालुओं का हार्दिक अभिनन्दन है।

शुभकामनाओं के साथ

अभिषेक सिंह, भा०प्र०से०
जिला पदाधिकारी, गया।